राजस्थान के विद्यालयों के संदर्भ में विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता संवर्धन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

लेखक :आशीष जिंदल

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

उद्देश्य→

1. विद्यार्थियों में प्रभावी नेतृत्व क्षमता अवधारणा की गहरी समझ विकसित करना।
2. विद्यालयों में नेतृत्व कौशल को बढ़ाने व सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए व्यावहारिक रणनीतिया प्रदान करना।
3. विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता के समक्ष उत्पन्न चुनौती को समझने व समाधान की तरफ बढ़ना।
4.संस्था प्रधान के लिए विद्यार्थी नेतृत्व को विकसित करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों की जानकारी देना।

प्रत्येक इंसान जीनियस है लेकिन यदि आप मछली में पेड़ पर चढ़ने की योग्यता देखेंगे तो वह मछली जिंदगी भर स्वयं को मूर्ख समझती रहेगी अल्बर्टआइंस्टीन

विद्यालय को राष्ट्र निर्माण जैसे गुरुत्तर उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होता है। इस दायित्व का निर्वहन करने के लिए विद्यालय के संस्था प्रधान को संगठनकर्ता के रूप में कार्य करते हुए संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक विशेष प्रकार का वातावरण निर्माण करना होता है। वह विद्यालय के शिक्षकों ,छात्रों एवं समुदायों को न केवल नेतृत्व प्रदान करता है अपितु उनकी क्षमताओं और योग्यताओं को पहचान कर संस्था के सफल संचालन में टीम के सदस्यों को लीडर के रूप में भी प्रोत्साहित करता है।

एक व्यक्ति जो बिना किसी पुरस्कार या दंड की अन्य व्यक्तियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम हो एवं अपनी योजनाओं की प्रतिपुष्टि प्राप्त करते हुए अपने एवं सहयोगियों के विचार व व्यवहार में परिवर्तन व समायोजन करने में काबिल हो, नेतृत्वकर्ता होता है। विद्यालय स्तर पर नेतृत्वकर्ता विद्यालय प्रमुख, शिक्षक, विद्यार्थी कोई भी हो सकता है।
विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता एक विशेष गुणात्मक और कौशलिक प्रवृत्ति है जो छात्रों को समूह में अग्रणी भूमिका निभाने की क्षमता है। यह उन्हें सामूहिक गतिविधियों

का नेतृत्व करने ,समस्याओं का समाधान करने ,सहयोग व समर्थन करने और अन्य को प्रेरित करने में सक्षम बनाती है। विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता छात्रों को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण रोल निभाती है और उन्हें अपने व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

चिन्तन/मनन के प्रश्न -

1. विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता संवर्धन हेतु किन गुणों की आवश्यकता होती है ?
2. क्या एक विद्यार्थी नेतृत्वकर्ता के रूप में अन्य विद्यार्थियों को प्रभावित कर सकता है ?
3. संस्था प्रधान के तौर पर विद्यार्थी के नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है ?
4. विद्यार्थी के नेतृत्वकर्ता बनने में कौन से कारक बाधक होते हैं ?

इतिहास साक्षी रहा है कि अबोध बालक की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य के रूप में बनाने वाले कुशल शिल्पी रूपी शिक्षक आचार्य चाणक्य ही थे। विद्यार्थियों की दशा और दिशा बदलने के कार्य गुरुकुल के रूप में सदियों से किया जाता रहा है। वर्तमान में विद्यालय प्रमुख द्वारा विद्यार्थी की नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के लिए विद्यालयों में स्वतंत्रता और स्वाधीनता की अद्भुत कहानियां ,प्रेरणास्पद कथाओं ,महान वैज्ञानिकों नेताओं की जीवनियों ,आदर्श और साक्षात्कार के स्रोतों माध्यम से प्रेरित किया जाना चाहिए। ऐसी प्रेरक कहानियां विद्यार्थियों में अपनी समय ऊर्जा और क्षमता का सही दिशा में सही उपयोग के लिए दिशा दिखाती है तथा लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करती हैं राजस्थान के विद्यालयों में करियर आयोजन के पीछे विद्यार्थी की शैक्षिक और कैरियर लक्षण में मार्गदर्शन व सहायता प्रदान करना ही है।

विद्यालय प्रमुख द्वारा विद्यालय के लिए निर्धारित की गई सोच, संस्कृति व वातावरण का विद्यार्थी की मानसिक स्थिति पर गहरा असर पड़ता है। अगर विद्यार्थी बिना भय के सहज तरीके से कक्षा कक्ष में अध्ययन के दौरान शिक्षक से प्रश्न पूछ सकता है अथवा विद्यालय विकास योजना बनाते समय विद्यार्थियों के मंतव्य विचारों को शामिल किया जाता है तो ऐसे विद्यार्थियों में भविष्य में जिज्ञासा व उत्सुकताओं का जन्म होता है। इससे उनमें स्वयं अध्ययन कर ज्ञान को विस्तारित करने व क्षमताओं को निखार कर नेतृत्व दिखाने का मौका मिलता है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धा युग में हर बच्चा जीतने के लिए या फर्स्ट आने के लिए दौड़ लगा रहा है। ऐसे वह हार स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार नहीं कर पाता जिसका परिणाम है तनाव में रहना और आत्महत्या जैसे घातक कदमों को सोचना अथवा कर लेना। अतः संस्था प्रधान का दायित्व है कि वह विद्यालय का वातावरण इस प्रकार निर्मित करें जिसमें बच्चों की यह समझ विकसित हो कि अगर वह फर्स्ट नहीं आए या हार भी जाए तो कोशिश नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि

असफलता सफलता की पहली सीढ़ी होती है। बच्चों द्वारा हार को भी स्वीकार करने की आदत लीडरशिप के लिए आवश्यक गुणों में से एक है। अच्छा नेता विफलता से अप्रभावित रहकर अपने लक्ष्य की ओर निरंतर उन्मुख रहता है ।

विद्यार्थियों को सामाजिक क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों में सक्रिय रखने के लिए एवं उनमें पहल के गुण को विकसित करने के लिए संस्था प्रधान का दायित्व है कि वह विभिन्न प्रकार के सामाजिक क्रियाकलापों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें। इसके लिए विद्यालय में supw,nss,ncc,स्काउट विभिन्न गतिविधियों को ढंग से आयोजित करें। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी को समाज को नजदीक से देखने का मौका मिलता है। उनमें समझ विकसित होती है , अनुभव का उदय होता है जो कि उसकी नेतृत्व क्षमता को परमार्जित करते हैं।

बच्चों की सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर विद्यालय में आयोजित की जाने वाली पाठ्येत्तर गतिविधियां जैसे खेलों को न सिर्फ शारीरिक दृढ़ता के लिए अपितु मानसिक मजबूती के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है। जो बच्चे अक्सर गेम्स या स्पोर्टस में भाग लेते हैं, उनकी लाइफ में स्थिरता रहती है और मुश्किल से मुश्किल घड़ी में वे परेशान नहीं होते। ऐसे बच्चे अक्सर समस्याओं के समाधान पर फोकस करते हैं उनमें टीम भावना का संचार होता है। वह परेशानियों से डरते नहीं अपितु उनका सामना करते हैं। अतः विद्यालय प्रमुख द्वारा बच्चों को उनकी क्षमतानुसार खेल गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित कर क्षमता संवर्धन करते रहना चाहिए।

विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता संवर्धन के लिए संस्था प्रधान सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों द्वारा सह शैक्षिक गतिविधियों में अधिक से अधिक भाग लिया जाए। इसके लिए विद्यालय स्तर पर अनेक मंच उपलब्ध होते हैं- प्रार्थना सभा ,नुक्कड़ नाटक, बालसभा, बाल संसद, यूथ व इको क्लब ,गार्गी मंच राजू मंच, इत्यादि। इन कार्यक्रमों की गतिविधियां बच्चों में आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। आत्मविश्वास से भरे बच्चे इन कार्यक्रमों का न सिर्फ स्वयं संचालन करते हैं अपितु नए-नए प्रयोग

करने से नहीं हिचकते। इससे उनमें पहल करने व नवाचार करने की क्षमता व दक्षता का विकास होता है। यह लीडरशिप के जरूरी गुणों में से एक है।

प्रभावी अभिव्यक्ति एवं संवाद कौशल किसी भी नेतृत्वकर्ता की लिए चार चांद लगा देता है। इस कौशल को बढ़ाने के लिए विद्यार्थी को सांस्कृतिक कार्यक्रमों और विद्यालय की पत्रिका में विद्यार्थियो की रचनाओं ,कथा ,कहानियों ,कविताओं, प्रसंग, आत्मकथा ,आत्म संस्मरण ,उपलब्धियां इत्यादि को उचित स्थान देना चाहिए। इससे विद्यार्थियों की विचारों को स्पष्ट प्रभावी तरीके से व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है ।

विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता के संवर्धन के लिए विद्यालय प्रमुख को टीम नेतृत्व, संगठनात्मक कौशल और समूह में काम करने की योग्यता विकसित करने के लिए बाहरी व्यक्तियों संस्थाओं और संगठनों के साथ मेंटरिंग प्रोग्राम, कार्यशाला, संगोष्ठी, संवाद सत्र, इत्यादि गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में अपने अभियांत्रिकी कौशल को निर्धारित करने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है।
विद्यालय प्रमुख का स्वयं का आचरण एवं व्यक्तित्व भी विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता के लिए उत्तरदायी होता है। अगर उसकी कथनी और करनी समान हो तो विद्यार्थी आदर्श मानकर उसका अनुसरण करते हैं। विद्यार्थियों पर इसका सकारात्मक और गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

विद्यालय प्रमुख को विद्यार्थियों को बंधे बंधाए निर्धारित पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखना चाहिए अपितु उनका नेतृत्व विकास सुनिश्चित करने के लिए उनकी

विभिन्न स्तर की बौद्धिक क्षमता के अनुरूप सकारात्मक व समुचित वातावरण उपलब्ध करना चाहिए।

केस स्टडी 1

मनीषा झालावाड़ जिले के डग पंचायत समिति के एक छोटे से गांव 'हसामदी' की निवासी है, और वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रोझाना में कक्षा 10 की छात्रा है। एक साधारण किसान परिवार में जन्मी और पली बढ़ी मनीषा ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि उसके द्वारा बनाए गए एक साधारण से मॉडल द्वारा उसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान,पुरस्कार और विदेश यात्रा का अविश्वसनीय उपहार प्राप्त होगा। सचमुच पूर्ण रूप से ग्रामीण परिवेश में रची बसी मनीषा के लिए हाल ही में की गई जापान यात्रा किसी परीकथा से कम नहीं है। उसने बचपन से ही गांव की महिलाओं को और अपनी मां को हाथ से गोबर उठाते हुए देखा और उसने महसूस किया कि इस कार्य में ग्रामीण महिलाओं को कितनी असुविधा का सामना करना पड़ता है। इसी असुविधा ने उसके दिमाग में एक विचार को जन्म दिया और उसने शीघ्र ही अपने अध्यापक के सहयोग और स्वप्रयास द्वारा अपने इस विचार को भौतिक और मूर्त स्वरूप प्रदान किया। मनीषा ने एक ऐसा यंत्र तैयार किया जिससे बिना हाथ लगाए आसानी से गोबर उठाया जा सके। मनीषा के इस मॉडल को बहुत सराहा गया और उसे बाल वैज्ञानिक के तौर पर क्रमशः ब्लॉक स्तर, जिला स्तर और राज्य स्तर पर प्रथम

पुरस्कार मिला। मनीषा के इस मॉडल को दिल्ली में इंस्पायर मानक अवार्ड के तहत प्रस्तुत किया गया, जहां उसका चयन राष्ट्रीय स्तर पर बाल वैज्ञानिक के रूप में हुआ। अभी हाल ही में कुछ चुनिंदा बाल वैज्ञानिकों को जापान की यात्रा पर ले जाया गया जहां इस छोटे से गांव की बालिका ने राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया जो कि गौरव की बात थी।

हमारे ग्रामीण समाज में मनीषा जैसी अनेक बाल प्रतिभाएं मौजूद है जिन्हें उचित दिशा और मार्गदर्शन प्राप्त हो तो वह शिक्षा के क्षेत्र में अपना बेहतर प्रदर्शन कर नए आयाम स्थापित कर सकती है। मनीषा की जापान यात्रा उसके अपने गांव ही नहीं अपितु पूरे जिले के लिए गौरव की बात है। निश्चित रूप से मनीषा की इच्छाशक्ति और पहल बालिका शिक्षा और स्वतंत्रता के उत्थान में मील का पत्थर साबित होगी। मनीषा का लगन और विश्वास अन्य बालिकाओं के लिए भी सफलता का मार्ग प्रशस्त करे।

केस स्टडी 2

रा उ मा वि नाम नदवई भरतपुर अन्य विद्यालयों की भांति सामान्य रूप से संचालित हो रहा था। विद्यार्थी प्रतिवर्ष शैक्षिक गतिविधियों में सामान्य प्रदर्शन कर संतुष्ट थे और अपने अंदर छुपी प्रतिभा के ज्ञान और प्रदर्शन के अवसर से वंचित थे लेकिन विद्यालय प्रमुख द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रख पाठ सहगामी क्रियाओं को बढ़ावा देने के लिए छात्रों की शारीरिक सुदृढ़ता,

इच्छाशक्ति,टीम भावना को महसूस कर अपने शारीरिक शिक्षक की मदद से खेलों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को ढूंढ कर काम करना शुरू किया। इसी का परिणाम है कि यहां के विद्यार्थी राज्य स्तर पर खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। सत्र 2022-23 में वॉलीबॉल की टीम राज्य स्तर पर चयनित हुई। वहीं 2023-24 में विद्यालय के कक्षा 12 के छात्र अंकित द्वारा वेट लिफ्टिंग में राज्य स्तर पर खेल में भाग लिया। इसका परिणाम यह है कि आज इन विद्यार्थियों से अन्य विद्यार्थी से प्रभावित होकर खेलों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए आतुर हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि विद्यार्थी स्वयं दूसरे विद्यार्थियों के लिए नेतृत्वकर्ता हो सकता है। नेतृत्व विशेषता केवल कुछ चुनिंदा व्यक्तियों की नहीं होती बल्कि हर किसी में हो सकती है। विद्यार्थी अपनी उत्कृष्टता, उत्साह और सक्रियता के माध्यम से दूसरों को प्रेरित करने संगठित करने और मार्गदर्शन करने में सक्षम हो सकते हैं।

चिंतन की प्रश्न

1. क्या आप महसूस करते हैं कि आप भी किसी विद्यार्थी के रोल मॉडल बन सकते हैं ?
2. क्या आपने किसी विद्यार्थी के नेतृत्व गुणों के विकास में कोई कार्य किया है ?
3. क्या अपने सपनों का विद्यालय बनाने में विद्यार्थियों के विजन को जानने का प्रयास किया है ?
4. क्या आप अपने विद्यालय में यह जानने का प्रयास करते हैं कि नेतृत्वकर्ता के सार्वभौमिक गुण और विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में अंकित गुणों में साम्यता है ?

समेकन

स्पष्ट है विद्यालय प्रमुख को विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निर्माण करना पड़ता है। वर्तमान स्थिति पर दृष्टिपात करें तो प्रबंधन, व्यवसाय ,तकनीक ,शैक्षिक प्रौद्योगिकी ,व्यापार एवं उद्योग के स्वर्णिम विकास के लिए एवं भविष्य में स्वच्छ और प्रभावशाली नेतृत्व के लिए योग्य नागरिक तैयार करने ही होंगे। आज

के विद्यार्थी कल की राजनीतिक ,नीति निर्धारक ,वैज्ञानिक ,खोजकर्ता ,खगोलीय अनुसंधानकर्ता इत्यादि बनकर राष्ट्र के विकास के लिए निमित्त व्यक्ति होंगे। यदि आज विद्यार्थियों के नेतृत्व का विकास नहीं होगा तो उपयुक्त तथ्यों के विकास में अत्यधिक बाधा उत्पन्न होगी। अतः भावी सुयोग्य नागरिकों की पीढ़ी को तैयार करने में विद्यालयों में नेतृत्व कौशलों को अमली जामा पहनाना ही होगा। इसके लिए विद्यालय प्रमुख का बच्चों की प्रति व्यवहार मित्रवत ,सहयोगात्मक ,प्रेरक ,उत्साहवर्धक होना चाहिए। तभी वह विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता संवर्धन में पथ प्रदर्शक के तौर पर मार्गदर्शन कर सकता है।

वीडियो लिंक

https://www.youtube.com/watch?v=GPeeZ6viNgY&t=89s

संदर्भ सूची

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- बच्चों में लीडरशिप अनुजा भट्ट ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली
- शिवरा पत्रिका माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- http://ncsl.niepa.ac.in/sla-module-2022-23-hr.php

लेखक
आशीष जिंदल
प्रधानाचार्य
राउमावि, नाम, नदबई
भरतपुर, राजस्थान